मंदिर का इतिहास

वाराणसी के इस दुर्गा मंदिर का इतिहास युगों पुराना है। मंदिर का निर्माण काशी नरेश राजा सुबाहू के द्वारा कराया गया। मंदिर और इस स्थित कुंड के निर्माण के पीछे का कारण एक युद्ध था। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सहस्त्राब्दियों के पहले राजा सुबाहू ने अपनी पुत्री के विवाह के लिए स्वयंवर का आयोजन किया, लेकिन राजकुमारी ने स्वयंवर के पहले स्वप्न में अपना विवाह अयोध्या के राजकुमार सुदर्शन से होता हुआ देखा। राजकुमारी ने यह बात अपने पिता से बताई तो उन्होंने इसकी चर्चा स्वयंवर में आ चुके राजाओं से की। राजाओं ने इसे अपना अपमान समझा और सुदर्शन के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। प्रयागराज में भारद्वाज ऋषि के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करने वाले राजकुमार सुदर्शन ने राजाओं की चुनौती स्वीकार कर मां दुर्गा से विजय का आशीर्वाद मांगा। युद्ध भूमि में जब सुदर्शन युद्ध के लिए पहुंचा, तो खुद आदि शक्ति ने वहां पहुंचकर विरोधियों का वध कर डाला। इस भीषणतम युद्ध के कारण रक्त से एक कुंड निर्मित हो गया। यही कुंड दुर्गा कुंड कहलाया। मां दुर्गा ने खुद राजकुमारी का विवाह, सुदर्शन के साथ करने का आदेश दिया। इसके बाद राजा सुबाहू ने इस स्थान पर मां दुर्गा के दिव्य मंदिर का निर्माण कराया। कहा जाता है कि शुंभ और निशुंभ का वध करने के बाद भी मां दुर्गा ने इसी स्थान पर विश्राम किया था।

आदिशक्ति का धाम
काशी का दुर्गा कुंड मंदिर

आचार्य टेकनारायण उपाध्याय
वरिष्ठ अर्चक श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी

आदिकाल में काशी में केवल तीन ही मंदिर थे, पहला काशी विश्वनाथ, दूसरा मां अन्नपूर्णा और तीसरा दुर्गा मंदिर। इसी में दुर्गा मंदिर वाराणसी मां दुर्गा की स्तुति के लिए महत्वपूर्ण स्थान है। मान्यता है कि असुर शुंभ और निशुंभ का वध करने के बाद मां दुर्गा ने यहां विश्राम किया था। कहा जाता है कि माता यहां पर आदि शक्ति स्वरूप में विराजमान करती हैं और यह मंदिर आदिकाल से है। कुछ लोग यहां तंत्र पूजा भी करते हैं। यहां पर स्थित हवन कुंड में हर रोज हवन किया जाता है। स्वामी विवेकानंद जी जब भी वाराणसी आते थे, तो इस मंदिर में अवश्य पधारते थे।

पौराणिक मान्यताएं

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जहां भी मां दुर्गा प्रकट होती हैं, वहां पर उनके प्रतीकों की उपासना की जाती है। यह स्थान भी उनमें से एक है। यहां मां दुर्गा के मुखौटे और चरण पादुका की प्राण-प्रतिष्ठा की गई है। वाराणसी का यह दुर्गा कुंड मंदिर बीसा यंत्र पर आधारित है। बीसा यंत्र का मतलब है 20 कोण वाली एक तांत्रिक संरचना, जिस पर इस दुर्गा मंदिर की नींव रखी गई है। इस मंदिर को तंत्र साधन के लिए भी जाना जाता है। नवरात्रि में चौथे दिन माता कुष्मांडा की पूजा की जाती है और इस दिन मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाता है।

मंदिर की संरचना

वाराणसी के इस दुर्गा कुंड मंदिर का निर्माण प्रसिद्ध नागर शैली में हुआ है। लाल पत्थर से बने इस मंदिर की बनावट इतनी सुंदर है कि यहां दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालु मंदिर देखकर ही मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वैसे तो इस मंदिर का इतिहास युगों पुराना है, लेकिन वर्तमान दृश्य मंदिर की स्थापना सन् 1760 में बंगाल की रानी भवानी द्वारा की गई। उस समय मंदिर के निर्माण में 50000 रुपये से अधिक की लागत आई थी। मंदिर का वर्णन काशी खंड में भी मिलता है। मंदिर में मां दुर्गा के अलावा बाबा भैरोनाथ, महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली की मूर्तियां भी स्थापित हैं। मंदिर में मां दुर्गा के अनन्य भक्त एवं मंदिर के पुजारी को भी समर्पित स्थान प्राप्त है। मान्यताओं के अनुसार प्राचीन समय में मंदिर के पुजारी को मां दुर्गा का वरदान प्राप्त हुआ, तब से ही मंदिर में मां दुर्गा के साथ उस पुजारी के दर्शन भी किए जाते हैं। मंदिर परिसर में ही एक हवन कुंड भी है, जहां प्रतिदिन मां दुर्गा के लिए हवन किया जाता है।

बीसा यंत्र पर स्थित है मंदिर

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जहां माता स्वयं प्रकट होती हैं, वहां मूर्ति स्थापित नहीं की जाती। ऐसे मंदिरों में केवल चिह्न की पूजा की जाती है। दुर्गा मंदिर भी उन्हीं श्रेणियों में आता है। यहां माता के मुखौटे और चरण पादुका की पूजा की जाती है। काशी का दुर्गा मंदिर बीसा यंत्र पर आधारित है। बीसा यंत्र का मतलब बीस कोण की यांत्रिक संरचना, जिसके ऊपर मंदिर की आधारशीला रखी गई है।

पौराणिक कथा

चौसर का षड्यंत्र: पांडवों पर दुर्योधन की चाल

एक दिन युधिष्ठिर ने अपने भाइयों से कहा कि वह युद्ध की संभावना को खत्म करने के लिए तेरह वर्षों तक किसी भी भाई या बंधु को बुरा-भला नहीं कहेंगे। उन्होंने यह भी संकल्प लिया कि वे हमेशा अपने भाइयों और बंधुओं की इच्छा के अनुसार कार्य करेंगे और ऐसा कुछ नहीं करेंगे, जिससे आपसी मनमुटाव पैदा हो। युधिष्ठिर की यह बातें उनके भाइयों को भी सही लगीं और उन्होंने तय किया कि वे झगड़े और फसाद का कारण नहीं बनेंगे। वहीं दूसरी ओर, राजसूय यज्ञ की भव्यता और पांडवों की यश-समृद्धि दुर्योधन के मन में ईर्ष्या और जलन पैदा कर रही थी। वह देख रहा था कि पांडवों के मित्र देश-राजा हैं और उनकी शक्ति और सम्मान लगातार बढ़ रहा है।

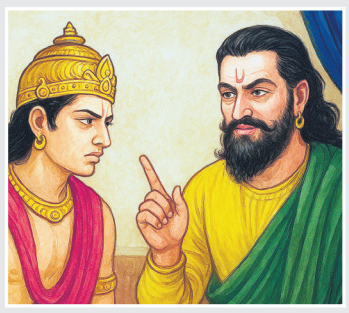

एक दिन दुर्योधन इसी चिंता और उदासी में अपने महल के एक कोने में खड़ा था कि उसका मामा शकुनि वहां आ गए। शकुनि ने पूछा कि वह इतना दुखी और चिंतित क्यों है? दुर्योधन ने उत्तर दिया कि पांडवों की संपन्नता देखकर उसका मन उदास है और जीवन का उत्साह कम हो गया है। शकुनि ने उसे सांत्वना दी और कहा कि पांडव उसके भाई ही हैं और उनके सौभाग्य पर जलन करना उचित नहीं है। उन्होंने समझाया कि पांडव केवल वही प्राप्त कर रहे हैं, जो उनका वैधानिक अधिकार है। साथ ही, दुर्योधन के पास भी द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण और अन्य वीर साथी हैं, जो उसका समर्थन कर सकते हैं। शकुनि ने दुर्योधन को सुझाव दिया कि पांडवों पर विजय पाने के लिए युद्ध के बजाय चतुराई अपनाई जाए।

शकुनि ने दुर्योधन को युधिष्ठिर का कमजोर पक्ष बताया-चौसर का खेल। युधिष्ठिर को यह खेल पसंद था, लेकिन वह इसे अच्छी तरह नहीं खेल पाते थे। शकुनि ने योजना बनाई कि वे दुर्योधन की ओर से खेलेंगे और युधिष्ठिर को हराकर उसका राज्य और ऐश्वर्य बिना युद्ध के हासिल कर लिया जाएगा। दुर्योधन इस विचार से उत्साहित हो उठा और दोनों ने धृतराष्ट्र से पांडवों को खेल के लिए बुलाने की अनुमति मांगी। धृतराष्ट्र ने पहले तुरंत अनुमति देने से इंकार किया और कहा कि वे विदुर से भी सलाह लेंगे। उन्होंने चिंता जताई कि यह जुआ वंश के लिए नुकसानदायक हो सकता है। विदुर ने चेतावनी दी कि खेल से आपसी मनमुटाव और झगड़े-फसाद बढ़ेंगे, जिससे कुल में भारी विपदा आएगी, लेकिन दुर्योधन के आग्रह और पिता के पुत्रप्रेम के कारण धृतराष्ट्र ने आखिरकार युधिष्ठिर को खेल के लिए न्यौता भेजने की अनुमति दे दी और सभा मंडप बनाने का आदेश भी दिया।

इस प्रकार, युधिष्ठिर का निष्कलंक चरित्र और पांडवों का सौभाग्य दुर्योधन के मन में ईर्ष्या की आग भड़का गया। शकुनि की चतुराई और दुर्योधन की लालसा ने ऐसा षड्यंत्र रचा, जो भविष्य में महाभारत युद्ध की नींव बन गया। चौसर का यह खेल केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि यह योजना बनकर पांडवों के साम्राज्य और सत्ता पर कब्जा करने का माध्यम बन गया। **- फीचर डेस्क**

बोधकथा

किसी को चोट न लगे

मैं जब छोटी थी, तब उन दिनों गर्मी की छुट्टियों की बात ही कुछ और थी। तब मैं एक महीने पहले से ही मम्मी-पापा से गांव जाने के लिए पूछने लगती थी। एकाध बार तो मम्मी मेरे बार-बार पूछने की वजह से झल्ला जातीं और उसी झल्लाहट में मुझे डांट भी देती थीं, लेकिन तब पापा प्यार से गोद में लेकर बताते कि अगले हफ्ते हम सभी अपने गांव चलेंगे, बिटिया। यह सुनकर मैं खुश हो जाती।

फिर घंटों सोचने बैठ जाती कि इस बार गांव में क्या-क्या और कौन-कौन सी शरारत मुझे करनी है। जिस दिन गांव पहुंचती, उसी दिन से मेरी धमा-चौकड़ी शुरू हो जाती और घर के सभी बड़े कहते कि इसकी सारी आदतें लड़कों से मिलती हैं, लगता ही नहीं कि यह लड़की है। आखिर मैं परिवार की अकेली लड़की जो थी और बाकी सभी लड़के थे।

उन दिनों गर्मी की छुट्टियों में मुझे गिल्ली-डंडा खेलना सबसे ज्यादा पसंद था। मैं गिल्ली-डंडा ज्यादा देर तक खेल सकूं, इसके लिए मैं बेईमानी करने से भी बाज़ नहीं आती थी। लेकिन मम्मी को मेरा गिल्ली-डंडा खेलना बिल्कुल पसंद नहीं था। वह अक्सर मेरे गिल्ली-डंडा खेलने की वजह से झल्ला जाती थीं, क्योंकि उन्हें पता था कि दादा-दादी मेरा ही पक्ष लेंगे।

पर एक दिन मेरी गिल्ली सामने से आ रही पड़ोस की चाची की आंख में जा लगी और वह चीखती हुई बोलीं, "हाय! मार डाला रे, मेरी आंख फूट गई!" चाची के इस शोर-शराबे की वजह से अगल-बगल के लोगों के साथ ही उसके घर के लोग भी बाहर आ गए। और मैं मारे डर के थर-थर कांप रही थी। मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि यह

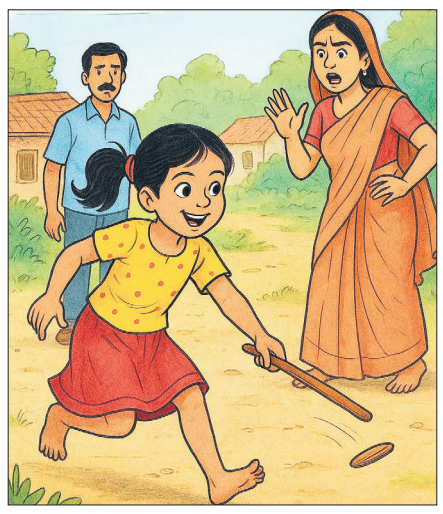

अचानक से कैसे हो गया। चाची की आँख से खून रिस रहा था। आंख फूलकर ऐसे ढक गई थी, जैसे इससे पहले वहां आंख थी ही नहीं। फिर मम्मी को मानो मौका मिल गया। उन्होंने ऐसी डांट लगाई कि मेरी घिग्घी बंध गई।

मैं चार-पांच दिन तक घर से निकली ही नहीं। एक दिन चाची खुद घर आईं और उन्होंने प्यार से मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "बिटिया, इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं।" उनके इतना कहते ही मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैंने उनकी आंखों की तरफ देखा तो उनकी आंख पहले से ठीक थी, पर उसमें कुछ सूजन अब भी बाकी थी। उन्होंने गिल्ली मेरे हाथों में पकड़ाते हुए कहा, "तुम खूब गिल्ली-डंडा खेलो, लेकिन मैदान में, ताकि किसी को चोट न लगे।" उनके जाते ही मानो मेरे पैरों में पर लग गए हों और मैं झट गिल्ली-डंडे के साथ मैदान में जा पहुंची। जैसे ही मैं डंडे से गिल्ली को मारने वाली थी, वैसे ही मेरी बेटी सिम्मी ने आवाज़ लगाई—"मम्मी, मुझे कुछ खाने दे दो, बड़ी भूख लगी है।"

और मैं बिना डंडे से उस गिल्ली को मारे ही अपने वर्तमान में लौट आई।

-रंगनाथ द्विवेदी, *लेखक*

रिश्ते में ब्रेकअप और ग्रहों का प्रभाव

आचार्य मधुरेंद्र पांडेय
वास्तु विशेषज्ञ

लव-अफेयर में ब्रेकअप सिर्फ 'किस्मत खराब' होने से नहीं होता, ज्योतिष की भाषा में यह ग्रहों, भावों और चल रही दशा-महादशा का परिणाम होता है। कुंडली में प्रेम (5 वां भाव) और संबंध/साथी (7वां भाव) जब दबाव में आते हैं, तभी अच्छे-भले रिश्ते भी धीरे-धीरे या अचानक टूट जाते हैं।

प्रेम और रिश्ते के मुख्य भाव

ज्योतिष में लव अफेयर को सीधे-सीधे दो भाव संचालित करते हैं, 5 वां और 7 वां। 5 वां भाव आकर्षण, रोमैंटिक फीलिंग, प्रस्ताव, पहली मुलाकात और दिल की धड़कनें दिखाता है, जबकि 7 वां भाव प्रतिबद्धता, पार्टनर की स्थिरता और लंबे समय की संगति को दर्शाता है। जब 5 वें भाव या उसके स्वामी पर अशुभ ग्रहों का दबाव हो, तो प्यार शुरू तो होता है, पर शादी तक टिक नहीं पाता और बीच में ही ब्रेकअप हो जाता है।

7 वां भाव और उसका स्वामी रिश्ते की गहराई, भरोसा, समझौते की क्षमता और शादी की संभावना बताते हैं। यदि 7 वां भाव, उसका स्वामी या शुक्र/चंद्र अशुभ प्रभाव में हों, तो या तो सही साथी नहीं मिलता, या मिलकर भी संबंध में स्थिरता नहीं आ पाती।

कौन से ग्रह ब्रेकअप कराते हैं

- ब्रेकअप के मामले में ज्यादातर बार कुछ ग्रह बार-बार सामने आते हैं- शुक्र, मंगल, शनि, राहु, केतु और सूर्य।
- शुक्र : प्यार, आकर्षण, मोहब्बत की भाषा, सेंसुअलिटी और रिलेशनशिप की क्वालिटी का कारक है, कमजोर या पीड़ित शुक्र अक्सर प्रेम-विफलता देता है।
- मंगल : जोश, क्रोध, अहंकार, शारीरिक ऊर्जा और लड़ाई-झगड़े का ग्रह है, 5 वें या 7 वें भाव से जुड़कर अनबन और टकराव बढ़ाता है।
- शनि : दूरी, देरी, बोझ, जिम्मेदारी और ठंडापन लाता है, भावनाओं पर बर्फ डाल देता है, जिससे पार्टनर को उपेक्षा महसूस होती है।
- राहु : भ्रम, जुनून, ओब्सेशन और भ्रमित फैसले देता है, गलत व्यक्ति पर फोकस करवा सकता है या अवास्तविक उम्मीदें पैदा करता है।
- केतु : विरक्ति, अचानक दूरी, कट-ऑफ और बोरियत दिखाता है, एक समय बाद व्यक्ति को लगता है कि अब "कनेक्शन नहीं बचा।"

- सूर्य : अलगाव, ईगो और "मैं" की भावना बढ़ाता है, कई बार सूर्य की दशा या उसका 5 वें/7 वें भाव पर प्रभाव संबंध को अलगाव की ओर धकेल देता है।

मुख्य ग्रहयोग

- कुछ विशिष्ट योग ऐसे हैं, जिनके चलते अच्छे रिश्ते भी टूटने लगते हैं। शुक्र पर शनि या राहु की कड़ी दृष्टि/संयोग : भावनात्मक ठंडापन, शक, गलतफहमियां और भरोसे की कमी ला सकता है, जिससे धीरे-धीरे दूरी और ब्रेकअप बनता है।
- शुक्र का 6, 8 या 12 वें भाव में होना : 6वां भाव झगड़े और कोर्ट-कचहरी, 8 वां भाव गहरी उलझन, धोखा या छुपी बातों और 12 वां भाव दूरी, त्याग या परदेसीपन का संकेत देता है, जिससे प्रेम जीवन में संघर्ष और टूटन बढ़ सकती है।
- 5 वें भाव या उसके स्वामी पर राहु-केतु, शनि या मंगल का दबाव, प्यार शुरू हो भी जाए, तो किसी न किसी वजह से रिश्ता बीच में टूट जाता है, खासकर तब जब शादी की बात आती है।
- मंगल-शुक्र का तीखा मेल और साथ में राहु/केतु : बहुत तेज आकर्षण, फिजिकल पास्शन और ईगो क्लैश, जो शुरुआत में रोमांचक लगता है, पर बाद में थकान और झगड़े में बदल जाता है।
- 5 वां, 7 वां, 6 वां, 8 वां, 12 वां भाव ज्यादातर लव-ब्रेकअप में यही पांच भाव सक्रिय पाए जाते हैं।
- 5 वां भाव : प्रेम की शुरुआत, क्रश, प्रपोज़ल, डेटिंग और दिल की खुशियां, इसकी कमजोरी से रिश्ते का "आरंभ" तो होता है, पर "अंजाम" अच्छा नहीं होता।
- 7 वां भाव : पार्टनर, लिव-इन, विवाह, सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया गया रिश्ता, इस पर चोट या पाप ग्रह का प्रभाव रिश्ते की नींव हिला देता है।
- 6 वां भाव : विवाद, झगड़े, कोर्ट-केस, ईगो बैटल, 6 वें भाव से जुड़ी दशा चलने पर छोटी बात भी केस या अलगाव तक जा सकती है।
- 8 वां भाव : गुप्त संबंध, धोखा, अचानक घटनाएं, मानसिक दुख, इस भाव की सक्रियता में रिलेशन में रहस्यों का खुलासा, धोखे का एहसास या अचानक ब्रेकअप संभव है।
- 12 वां भाव : दूरी, विदेश, अस्पताल, अकेलापन और त्याग, कई बार 12 वें भाव के प्रभाव से पार्टनर दूर देश चला जाता है, व्यस्त हो जाता है या मानसिक रूप से कट जाता है।

बार-बार ब्रेकअप होने के कारण

- कुछ कुंडलियां ऐसी होती हैं, जहां एक रिश्ता नहीं, कई रिश्ते टूटते हैं।
- 5 वें और 7 वें दोनों भाव/स्वामी पर एक साथ पाप ग्रहों का बार-बार प्रभाव होना, जैसे राहु, केतु, शनि, मंगल की दृष्टि या संयोग। शुक्र और चंद्र दोनों कमजोर या पीड़ित हों, तो व्यक्ति या तो खुद भावनात्मक रूप से स्थिर नहीं होता या गलत लोगों को आकर्षित करता है।
- राहु के प्रभाव से व्यक्ति को आकर्षण बहुत तेजी से होता है, पर जब वास्तविकता सामने आती है, तो मोह भंग होने में देर नहीं लगती।
- चल रही दशा- भुक्ति ऐसे ग्रहों की हो, जो अलगाव, दूरी या संघर्ष के कारक हैं, जैसे सूर्य, शनि, राहु, 6 वें/8 वें/12 वें भाव के स्वामी आदि।

कब होता है ब्रेकअप-दशा और गोचर

कुंडली में योग बनने के बाद वास्तविक ब्रेकअप अक्सर दशा और गोचर के समय होता है। जब 6 वां, 8 वां या 12 वां भाव सक्रिय दशा में आ जाए या उनके स्वामी की महादशा/अंतर्दशा चले, तो संबंध में तनाव बढ़कर टूटन तक जा सकता है।

राहु-केतु, शनि या सूर्य का गोचर 5 वें/7 वें भाव, उनके स्वामी या शुक्र-चंद्र पर आ जाए, तो वह समय विशेष रूप से संवेदनशील माना जाता है। परंपरा में ऐसे समय में मंत्र, दान, व्रत, पूजा और ज्योतिषीय उपायों की भी सलाह दी जाती है ताकि मन शांत रहे और निर्णय जल्दबाजी में न लिए जाएं। हर व्यक्ति की कुंडली अलग होती है, इसलिए असली, सटीक उपाय तो वही होता है, जो 5 वें, 7 वें भाव, शुक्र, चंद्र, राहु केतु, शनि और चल रही दशा को देखकर दिया जाए।